DESCRIPTION OF THE GLORY OF 'RAM' IN THE PURANAS

पुराणों में ‘राम’ की महिमा का वर्णन

Km. Prerna Pandey [1], Devendra Nath Ojha [2], Umashankar [3]

[1] Researcher, Amity University Uttar Pradesh, Noida, India
[2] Guide, Assistant Professor (Grade-III), Amity Institute for Sanskrit Studies and Research, Amity University Uttar Pradesh, Noida
[3] Co-Guide, Prof, Department of Sanskrit, University of Delhi, India

Corresponding Author
Prerna Pandey,
prernaaug21@gmail.com

DOI
10.29121/shodhkosh.v5.i6.2024.5703

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2024 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

OPEN ACCESS

ABSTRACT

English: The description of 'Ram' ki Mahima' in the Puranas is a very extensive and profound subject. Ram ki Mahima is described mainly in various texts like "Ramayana", "Mahabharata", "Vishnu Purana", "Shiva Purana", and "Bhagavata Purana". Lord Rama, the symbol of Sattvic ideals of Hinduism, is worshiped as an incarnation of Maryada Purushottam and Vishnu. Every aspect of his life, like ideal son, husband, friend, warrior, king, etc., is praised in Ramayana. In this research paper I have highlighted the various dimensions of Rama's glory in the Puranas, presenting aspects of his godliness, virtuous conduct, and his divinity.

Hindi: पुराणों में ‘राम’ की महिमा’ का वर्णन एक अत्यंत विस्तृत और गहन विषय है। राम की महिमा का वर्णन मुख्यतः "रामायण", "महाभारत", "विष्णु पुराण", "शिव पुराण", और "भागवत पुराण" जैसे विभिन्न ग्रंथों में मिलता है। भगवान राम, हिंदू धर्म के सात्विक आदर्शों के प्रतीक, मर्यादा पुरुषोत्तम और विष्णु के अवतार के रूप में पूजनीय हैं। रामायण में उनके जीवन के प्रत्येक पहलू, जैसे आदर्श पुत्र, पति, मित्र, योद्धा, राजा आदि के रूप में उनकी महिमा का गुणगान किया गया है। इस शोध पत्र में मैंने पुराणों में राम की महिमा के विभिन्न आयामों पर प्रकाश डाला है , जिनमें उनके ईश्वरत्व, नीतिपूर्ण आचरण, और उनकी दिव्यता के पहलुओं को प्रस्तुत किया गया है।

Keywords: Purana, Purushottam, Ramayana, Mahabharata, Value, पुराण, पुरुषोत्तम, रामायण, महाभारत, मूल्य

1. प्रस्तावना

"राम" शब्द का एक अन्य अर्थ "आनंद का स्रोत" है। उनका नाम स्वयं में आनंद और शांति का प्रतीक है। राम का नाम लेते ही मनुष्य के मन में शांति और प्रसन्नता का संचार होता है। राम नाम का जप भारतीय संस्कृति में मोक्षदायी माना गया है। भगवान राम आदर्श मानव और दिव्य व्यक्तित्व के रूप में प्रकट हैं। उनके जीवन से धर्म, सत्य, करुणा, नीतिपरायणता, और समर्पण जैसे मूल्यों का संदेश मिलता है। उनके चरित्र में हर गुण और आदर्श छिपा हुआ है, जिसे समाज ने अपने आदर्शों के रूप में अपनाया है।

पुराणों में भगवान राम की महिमा का वर्णन अत्यंत विस्तृत और दिव्य है, जो उनके जीवन की महानता और उनके कृत्यों की दिव्यता को उजागर करता है। भारतीय पुराणों, विशेषकर 'रामायण' और विभिन्न अन्य ग्रंथों में, भगवान राम को 'मर्यादा पुरुषोत्तम' के रूप में प्रस्तुत किया गया है। वे न केवल एक आदर्श पुत्र और पति के रूप में बल्कि एक योग्य और धर्मपरायण राजा के रूप में भी पूजा जाते हैं। राम की कहानी उनके साहस, धैर्य, और निष्कलंक चरित्र की गाथा है, जो उन सिद्धांतों को उजागर करती है जिनके अनुसार एक व्यक्ति को जीवन में धर्म, सत्य और कर्तव्य का पालन करना चाहिए। पुराणों में राम के गुणों, उनके संघर्षों, और उनके द्वारा स्थापित आदर्शों का वर्णन इस बात का प्रमाण है कि कैसे वे अपने समय के सबसे बड़े

और सबसे प्रिय नायक बने। यह वर्णन हमें न केवल एक ऐतिहासिक और धार्मिक दृष्टिकोण से भगवान राम के महत्व को समझने में मदद करता है, बल्कि यह हमारे जीवन में उनके उपदेशों और आदर्शों को अपनाने की प्रेरणा भी प्रदान करता है।

भगवान राम चैतन्य स्वरूप नित्य और निराकार हैं जिन्होंने अधर्म पर धर्म की विजय सुनिश्चित करने हेतु नर रूप में अवतार लिया और समस्त वसुधा को पाप मुक्त किया। उन्हें मर्यादा-पुरुषोत्तम, धर्मात्मा, सत्यसंध, पौरुषे-अप्रतिद्वंद,करुणानिधान,विनयशील,शरणागत-वत्सल आदि विशेषण भी उनके चरित्र वर्णन को परिपूरित नहीं कर सकते।

पुराणों और रामायण में राम के चरित्र का वर्णन न केवल धार्मिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है, बल्कि सांस्कृतिक और सामाजिक दृष्टिकोण से भी इसका विशेष महत्व है। भगवान राम को विष्णु का सातवां अवतार माना जाता है, जिन्होंने राक्षसों के विनाश और धर्म की स्थापना के लिए अवतार लिया। उनकी महिमा का वर्णन पुराणों में विस्तार से किया गया है।

पुराणों में राम : पुराणों में राम को विष्णु के सातवें अवतार के रूप में आदर्श पुरुष माना गया है। उन्हें "मर्यादा पुरुषोत्तम" कहा जाता है, जो धर्म, सत्य और कर्तव्य के प्रतीक हैं। रामायण में उनके जीवन की गाथा है, और वे करुणानिधान, सत्यसंध, और शरणागतवत्सल जैसे गुणों से युक्त हैं। पुराणों में राम की महिमा और उनकी ईश्वरतुल्य विशेषताएं विस्तार से वर्णित हैं। राम को धर्म, सत्य, और न्याय के आदर्श के रूप में देखा गया है। विष्णु के अवतार रूप में राम ने पृथ्वी पर अवतार लेकर अधर्म का नाश और धर्म की स्थापना की। उनके जीवन की प्रमुख घटनाएं, जैसे वनवास, रावण वध, और अयोध्या लौटकर आदर्श शासन की स्थापना, राम के आदर्श राजा और मानव के रूप में महत्व को दर्शाती हैं।

राम का चरित्र "सर्वधर्मसमभाव" का प्रतीक है, और उनके गुणों में करुणा, सहनशीलता, विनम्रता, और त्याग प्रमुख हैं। पुराणों में उनके शरणागतवत्सल स्वरूप की भी प्रशंसा की गई है, जहाँ वे अपने शरण में आए हर व्यक्ति की रक्षा करते हैं।

विष्णु पुराण में भगवान राम की विष्णु के अवतार के रूप में मान्यता है। यह पुराण राम की ईश्वरतुल्य विशेषताओं का वर्णन करता है। विष्णु पुराण के अनुसार, भगवान विष्णु ने धर्म की स्थापना के लिए राक्षसों के संहार हेतु राम के रूप में अवतार लिया।

"रामो रामो रामेति, रमे रामे मनोरमे।[1]

सहस्त्रनाम तत्तुल्यं, राम नाम वरानने॥"

अर्थात भगवान राम का नाम लेना विष्णु के हजार नामों के समान है। राम नाम की महिमा अनंत और अद्वितीय है।

शिव पुराण में भगवान राम की महिमा को शिवजी द्वारा गाया गया है। राम का नाम शिव के लिए अत्यंत प्रिय है, और राम के प्रति शिव की भक्ति का वर्णन मिलता है। उपरोक्त श्लोक शिव पुराण की रूद्र संहिता में भी प्राप्त होता है

रावणं च सहामात्यं हत्वा दुष्कृतकर्मणम्।[2]

रामो दाशरथिर्भूयो लोके धर्ममवाप्स्यति॥

भगवान राम, जो दशरथ के पुत्र हैं, रावण और उसके अमात्यों को नष्ट कर, संसार में धर्म की स्थापना करेंगे। यह श्लोक भगवान राम के जन्म की भविष्यवाणी के संदर्भ में है, जहां वे दशरथ के पुत्र के रूप में अवतार लेते हैं।

ततो रामो भवेद्देवि लोकानां हितकाम्यया।[3]

भरतो लक्ष्मणश्चैव शत्रुघ्नश्च महाबलः॥

इसके बाद राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न, लोकों के हित के लिए अवतार लेंगे। ये सभी महाबली और धर्मरक्षक होंगे।

यह श्लोक राम के वनवास और उनके संघर्षों का वर्णन करता है, जिसमें उन्होंने अपने पिता के वचन की रक्षा के लिए वनवास स्वीकार किया।

रामेण यद् वनं यातं हित्वा राज्यं सुखावहम्।[4]

वैदेह्या सह धर्मात्मा काकुत्स्थो वितथं न च॥

अर्थात धर्मात्मा राम ने राज्य और सुखों को त्यागकर वनवास स्वीकार किया और धर्म का पालन करते हुए सीता के साथ कष्ट सहन किया।

भागवत पुराण में राम की महिमा और उनके चरित्र का वर्णन विस्तार से किया गया है। इस पुराण में भगवान राम के धर्मपरायण और आदर्श चरित्र का उल्लेख है।

"धर्मात्मा सत्यसंधश्च रामो दाशरथिर्यदि।[5]

[1] विष्णु पुराण 6.3.9 || शिव पुराण, कोटि रुद्र संहिता 1.25.16

[2] विष्णु पुराण 4.4.40

[3] विष्णु पुराण 4.4.38

[4] विष्णु पुराण 3.5.10

5 श्रीमद्भागवत पुराण, 9.10.2

पौरुषे चाप्रतिद्वंद्वः सर्वं परवशं जगत्॥"

अर्थात भगवान राम धर्मात्मा, सत्य के प्रति अडिग, और अद्वितीय योद्धा हैं। उनका सामर्थ्य और धर्मपरायणता सर्वश्रेष्ठ है।

महाभारत के वन पर्व में राम की महिमा का वर्णन मिलता है। राम को एक आदर्श राजा, योद्धा और मानव के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

"राघवः शरणं याते यस्तु वध्यः पुरा रिपुः।[6]

रामं सत्यपराक्रमं नृपं वै शरणं गतः॥"

अर्थात भगवान राम की शरण में आने वाले व्यक्ति को राम हर संकट से बचाते हैं। उनकी वीरता और सत्यनिष्ठा अद्वितीय है।

अध्यात्म रामायण में भी भगवान राम की महिमा का विस्तार से वर्णन किया गया है। इसमें राम के ईश्वरत्व और उनकी भक्ति का विशेष महत्व बताया गया है।

"रामाय रामभद्राय रामचंद्राय वेधसे।[7]

रघुनाथाय नाथाय सीतायाः पतये नमः॥"

अर्थात हम भगवान राम को नमन करते हैं, जो संसार के रक्षक हैं, रघुकुल के नायक और सीता के पति हैं। उनकी महिमा अपरंपार है।

यह श्लोक महाभारत के वन पर्व (3.146.16) में मिलता है, जिसमें भगवान राम की महिमा और धर्म के प्रति उनकी निष्ठा का वर्णन है।

रामो विग्रहवान् धर्मः सदा रामः सतां गतिः।[8]

रामाभिरामं ये नाम तेषां नास्ति पराभवः॥

अर्थात भगवान राम धर्म के साक्षात स्वरूप हैं, और वे सदा सज्जनों के लिए परम गति हैं। जो लोग भगवान राम के नाम का जप करते हैं, उन्हें कभी भी पराजय का सामना नहीं करना पड़ता। उनका नाम अपार शक्ति और विजय का स्रोत है।

यह श्लोक भगवान राम की महानता, उनकी धर्मपरायणता और उनके नाम की शक्ति को उजागर करता है।

राम के धर्मपरायण होने प्रमाण ब्रह्माण्ड पुराण में भी प्राप्त होता है |

रामं दशरथं पश्य सत्यधर्मपरायणम्।[9]

कुलानां यो विनाशाय रावणस्य च कीर्तिना॥

अर्थात दशरथ पुत्र राम सत्य और धर्म के अनुयायी हैं। वे रावण और उसके कुल के विनाश के लिए प्रसिद्ध हैं।

महाभारत के वन पर्व में भी भगवान के शरणागतवत्सल स्वरुप को दर्शाया गया है |

राघवः शरणं याते यस्तु वध्यः पुरा रिपुः।[10]

रामं सत्यपराक्रमं नृपं वै शरणं गतः॥

अर्थात भगवान राम की शरण में जो कोई भी शत्रु आता है, वे उसे भी क्षमा कर देते हैं। राम की वीरता और सत्यनिष्ठा अद्वितीय हैं।

स चापि धर्मराजस्य पुत्रो रामो महामनाः।[11]

चकार यज्ञं त्रिषवणं येनातिप्रियेण हि॥

अर्थात, महामना राम ने धर्मराज के पुत्र होने के नाते त्रिपुर सुंदरी यज्ञ किया, जो उनके प्रति अत्यंत प्रिय था।

राम की महिमा और भक्ति : भगवान राम की महिमा उनके नाम और भक्ति के रूप में भी पुराणों में वर्णित है। राम नाम का जाप करने से ही भक्तों को मोक्ष की प्राप्ति होती है। यह मान्यता पुराणों में विस्तार से वर्णित है कि राम के नाम में ही इतनी शक्ति है कि वह समस्त कष्टों का नाश कर सकता है। राम की भक्ति से व्यक्ति को जीवन के सभी दुखों से मुक्ति मिलती है और आत्मज्ञान की प्राप्ति होती है।पुराणों में भगवान राम की महिमा का वर्णन अत्यंत विस्तृत और अद्भुत है। उनका मुख्य उद्देश्य धर्म की स्थापना और अधर्म का नाश करना था। पुराणों में भगवान राम को 'मर्यादा पुरुषोत्तम' के रूप में सम्मानित किया गया है, जो उनके आदर्श राजा और आदर्श मानव के रूप में गहराई से जुड़ा हुआ है।

6 महाभारत, वन पर्व, 3.275.23

7 अध्यात्म रामायण, अरण्यकाण्ड, 12.15

8 महाभारत, वन पर्व, 3.146.16

9 ब्रह्माण्ड पुराण 2.3.32.12

10 महाभारत, वन पर्व, 3.275.23

11 श्रीमद्भागवत पुराण, 9.10.32

धर्म, सत्य और कर्तव्य का पालन: राम का जीवन धर्म, सत्य और कर्तव्य के आदर्श उदाहरण के रूप में प्रस्तुत किया गया है। वे अपने पिता के वचन की रक्षा के लिए 14 वर्षों का वनवास स्वीकार करते हैं, और वनवास के दौरान भी उन्होंने धर्म और सत्य के मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी। यह उनकी सच्ची धर्मपरायणता का प्रमाण है।

आदर्श पति और पुत्र: राम को आदर्श पति और पुत्र के रूप में भी चित्रित किया गया है। वे सीता के प्रति अपनी निष्ठा और प्रेम को निभाते हैं, और माता-पिता के प्रति अपनी श्रद्धा और सम्मान को बनाए रखते हैं। उनके जीवन में किए गए त्याग और बलिदान, उनके चरित्र की महानता को दर्शाते हैं।

भक्ति और करुणा: पुराणों में राम की करुणा और भक्ति का भी विशेष वर्णन है। वे अपने भक्तों की हर संभव सहायता करते हैं और शरणागतों की रक्षा करते हैं। शिव पुराण और विष्णु पुराण जैसे ग्रंथों में राम के नाम की महिमा को अत्यंत ऊँचा माना गया है, और उनका नाम भक्ति का एक शक्तिशाली साधन है।

अवधारणा और विजय: पुराणों में राम का जीवन विजय और विजय की अवधारणा का प्रतीक है। वे रावण जैसे अत्याचारी का नाश कर धर्म की विजय स्थापित करते हैं, और उनके नाम का जप मोक्ष और विजय का स्रोत माना जाता है।

इन सब गुणों और विशेषताओं के माध्यम से, पुराणों में भगवान राम का चित्रण एक आदर्श व्यक्तित्व के रूप में किया गया है, जो धर्म, सत्य और भक्ति का प्रतीक है। उनके जीवन और कार्यों से प्राप्त उपदेश और मूल्य आज भी समाज के लिए प्रेरणादायक हैं।

निष्कर्ष : भगवान राम का जीवन और कार्य एक आदर्श और प्रेरणादायक उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। वे त्रेतायुग में अयोध्या के राजा दशरथ और रानी कौसल्या के पुत्र थे। उनकी कथा मुख्य रूप से महर्षि वाल्मीकि द्वारा रचित 'रामायण' में वर्णित है। भगवान राम को सत्य और धर्म का आदर्श मानक माना जाता है, जिन्होंने अपने जीवन में हर समय इन मूल्यों का पालन किया। वनवास के दौरान, उन्होंने सीता का हरण करने वाले रावण को पराजित किया और धर्म की विजय सुनिश्चित की। उनके वनवास के दौरान और रावण के खिलाफ युद्ध में, उन्होंने साहस और नेतृत्व का अद्वितीय उदाहरण प्रस्तुत किया। भगवान राम की मर्यादा और विनम्रता ने उन्हें आदर्श पुत्र, पति और राजा के रूप में प्रतिष्ठित किया। उनका जीवन हमें सत्य, धर्म और कर्तव्य के पालन की प्रेरणा देता है। भगवान राम की महिमा का वर्णन केवल पुराणों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह सम्पूर्ण मानव समाज के लिए एक आदर्श प्रस्तुत करता है। राम का चरित्र सत्य, धर्म, और मर्यादा का प्रतीक है। उनकी महिमा का गान भारतीय संस्कृति में अनंत काल से होता आ रहा है और यह भविष्य में भी अमर रहेगा। राम के आदर्श और उनकी नीतिपरायणता समाज के हर व्यक्ति के लिए एक प्रेरणा स्रोत हैं। पुराणों में राम की महिमा का वर्णन हमें यह सिखाता है कि जीवन में कितनी भी कठिनाइयाँ क्यों न आएं, धर्म और सत्य के मार्ग पर अडिग रहना चाहिए। राम की महिमा अमर है और यह युगों-युगों तक हमारे जीवन को दिशा दिखाती रहेगी।

संदर्भ ग्रंथ सूची

स्कंध पुराण -- गीताप्रेस गोरखपुर

पद्म पुराण -- गीताप्रेस गोरखपुर

भविष्य पुराण-- गीताप्रेस गोरखपुर

नारद पुराण-- गीताप्रेस गोरखपुर

भागवत पुराण -- गीताप्रेस गोरखपुर

ब्रम्हाण्ड पुराण -- गीताप्रेस गोरखपुर

विष्णु पुराण -- गीताप्रेस गोरखपुर

उपपुराण गीता प्रेस गोरखपुर

पुराण विमर्श - आचार्य बलदेव उपाध्याय उत्तर प्रदेश संस्थान लखनऊ